2024

ISSN 2231-1041

स्तोम
STOM

कलाभिव्यक्ति का माध्यम

यूजीसी-केयर सूचीबद्ध, पिअर रिव्यूड वार्षिक शोध पत्रिका
UGC-Care enlisted Peer Reviewed Annual Research Journal
वर्ष-24, अंक-24 / Year-24, Volume-24

'शिवम्' सांस्कृतिक मंच, छपरा

ISSN 2231-1041

स्तोम

कलाभिव्यक्ति का माध्यम

(यूजीसी-केयर सूचीबद्ध, पिअर रिव्यूड वार्षिक शोध पत्रिका)

वर्ष-24, अंक-24

प्रधान सम्पादक

प्रो० लावण्य कीर्ति सिंह 'काव्या'

सह सम्पादक

डॉ० कुमार विनय मोहन सिंह

'शिवम्' सांस्कृतिक मंच, छपरा

2024

संस्थापक

चन्द्र किशोर सिंह, अधिवक्ता

आदि मुद्रक

श्यामा सिंह

प्रबन्ध सम्पादक

डॉ० कुमार विमल मोहन सिंह

डॉ० कुमार निर्मल मोहन सिंह

प्रकाशक

'शिवम्' सांस्कृतिक मंच, छपरा

मुद्रक

कुमार प्रिन्टर्स,

लाह बाजार, छपरा-841301

पत्राचार का पता

प्रो० लावण्य कीर्ति सिंह 'काव्या'

फ्लैट नं०- 108

न्यू टीचर्स फ्लैट

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय

दरभंगा (बिहार)

मोबाईल नं० : 9835296330

ई-मेल : editor.stomresearchjournal@gmail.com

सहयोग राशि- **425/-**

पत्रिका के प्रकाशन से जुड़े सभी संगीतसेवी अवैतनिक हैं ।

लेखकों के विचार से सम्पादकीय सहमति आवश्यक नहीं है ।

स्तोम

कलाभिव्यक्ति का माध्यम

(यूजीसी-केयर सूचीबद्ध, पिअर रिव्यूड वार्षिक शोध पत्रिका)

सलाहकार मण्डल :
प्रो० पंकजमाला शर्मा
प्रो० द्वारम वी.जे. लक्ष्मी
विदुषी काजल शर्मा
प्रो० दर्शन पुरोहित
प्रो० के० शशि कुमार

सम्पादक मण्डल :
प्रो० संगीता पण्डित
प्रो० बी० राधा
डॉ० विधि नागर
डॉ० अनीता शिवगुलाम
डॉ० हिमांशु द्विवेदी

सहयोगी मण्डल :
प्रो० अर्चना अम्भोरे
प्रो० निशा झा
डॉ० राजश्री रामकृष्ण
डॉ० बिन्दु के०
डॉ० आरती एन० राव
डॉ० अरविन्द कुमार
डॉ० ज्योति सिन्हा
डॉ० मधुरानी शुक्ला
डॉ० अवधेश प्रताप सिंह तोमर
डॉ० रवि जोशी
डॉ० शिखा समैया
डॉ० अमित कुमार पाण्डेय

शिवम्–सरगम

आङ्गिकं भुवनं यस्य वाचिकं सर्ववाङ्मयम् ।
आहार्यं चन्द्रतारादि तं नुमः सात्विकं शिवम् ।।

नृत् कला की इस दुनिया में,
है अपना नया कदम ।
जहाँ सुर का संगम होता,
वो सरगम बना शिवम् ।।

लेकर हम चाँद सितारे
आपस में प्रीत सँवारे ।
प्रीत के इस मंदिर में,
नित शीष झुकाते हैं हम ।।

संगीत हो मन्त्र हमारा,
अभिनय हो शस्त्र हमारा ।
हम नेक, एक, जग जीते,
यही नाद सुनाते हैं हम ।।

हो विकसित जग में कलायें,
संस्कृति की अलख जगाएँ ।
यही भावना हमारी,
यही लक्ष्य बनाते हैं, हम ।

मूल रचना : रविभूषण 'हँसमुख'
परिकल्पना : विनय मोहन 'वीनू'
संगीत : लावण्य कीर्ति सिंह 'काव्या'

सम्पादकीय...

बहुत प्रसिद्ध और मार्मिक पद है भक्तकवि सूरदास का, कई महान गायकों ने इसका भावपूर्ण गायन भी किया है–

हे गोविन्द राखो शरण, अब तो जीवन हारे ।।
नीर पिवन हेतु गए, सिन्धु के किनारे ।
सिन्धु बीच बसत ग्राह, चरण धरि पधारे ।।
चार प्रहर युद्ध भयो, ले गयो मझधारे ।
नाक कान डूबन लागे, कृष्ण को पुकारे ।।
द्वारिका में शब्द भयो, गरूड़ तजि सिधारे ।
'सूर' कहे श्याम सुन्दर, आस है तिहारे ।।

इस गेय पद में हरिहर क्षेत्र के उसी प्रसंग का उल्लेख है जहाँ गज और ग्राह का युद्ध हुआ था और साक्षात् हरि ने प्रकट होकर, सुदर्शन चक्र चलाकर गज की रक्षा की थी । यहाँ इसी स्थान के नाम से मेला लगता है 'हरिहर क्षेत्र का मेला', इसे भगवान विष्णु (हरि) और शिव (हर) की पूजा के लिए आरम्भ किया गया । भारत वर्ष में पाँचवी–छठी शताब्दी में ही भगवान विष्णु और शिव की संयुक्त पूजा प्रारम्भ हो गई थी जिसका प्रमाण राजा ईशान वर्मन के कार्य–काल के अभिलेखों से प्राप्त होता है । राजा ईशान वर्मन भारतीय सभ्यता और संस्कृति से जुड़े विद्वान् थे । मुगलकाल में इस क्षेत्र का नाम 'सोनपुर' पड़ा था और इस मेला को 'सोनपुर मेला' भी कहते हैं क्योंकि यह बिहार के सोनपुर जो बिहार की राजधानी पटना से लगभग पच्चीस किलोमीटर तथा वैशाली जिला के मुख्यालय हाजीपुर से मात्र तीन किलोमीटर की दूरी पर अवस्थित है । यह मेला छपरा जिला के सोनपुर में गंगा और गंडक नदी के तट पर कार्तिक पूर्णिमा के अवसर पर (गंगा–स्नान) आयोजित होता है । इस मेला को 'छत्तर मेला' भी कहते हैं । इस मेला के सम्बन्ध में कहा जाता है कि भगवान विष्णु के दो भक्त शापित होकर गज (हाथी) तथा ग्राह (मगरमच्छ) के रूप में पृथ्वी पर अवतरित हुए थे । उपर्युक्त पद में वर्णित युद्ध यहीं कोनहारा घाट पर हुआ था, यहाँ हरिहरनाथ मन्दिर भी है जिसमें हरि और हर अर्थात् विष्णु तथा शिव की एकीकृत प्रतिमा है । वेद, श्रीमद्भागवत, महाभारत, पुराणादि में गज–ग्राह युद्ध का उल्लेख है । ऋग्वेद में हरिहर क्षेत्र का वर्णन प्राप्त होता है । महाभारत के सभापर्व और वनपर्व में इस क्षेत्र को 'महाबल' एवं 'अतिबल' सम्बोधित किया गया है । कहा गया है कि यहाँ स्नान का पुण्यफल प्राप्त होता है । तीर्थ दीपिका, वाराह पुराण, बामन पुराण में इस क्षेत्र का यशोगान किया गया है । अठाइसवें मन्वंतर में गजेन्द्र–मोक्ष की परिकल्पना प्राप्त होती है । इस 'गजेन्द्र मोक्ष स्थल' और मेले की अनेक धार्मिक मान्यताएँ हैं । यह पन्द्रह दिनों तक खूब धूम–धाम से चलता है, इसके बाद भी महीना–भर रहता है ।

इस मेला का उल्लेख विद्वान बौद्ध दार्शनिक बुद्ध घोष ने अपनी पुस्तक में किया है । तब हरिहर

क्षेत्र को 'उल्ला चेल' नाम से जाना जाता था जो वज्जि गणराज्य का हिस्सा था । इस गणराज्य के आठ (अठ्ठकुल) सदस्य थे । बौद्ध साहित्य के अनुसार, वज्जि गणराज्य में तब भी कार्तिक माह में सात दिवसीय कार्तिक स्नान का मेला लगता था ।

सम्पूर्ण बिहार की सभ्यता, संस्कृति और आस्था का ऐतिहासिक परिचय प्राप्त होता है हरिहर क्षेत्र मेला में । इसका इतिहास लगभग 717 (सात सौ सतरह) वर्ष पुराना है । हरिहर नाथ मन्दिर में आज भी वर्ष 1306 का शिलापट्ट लगा हुआ है जिस पर 'कार्तिक पूर्णिमा का उत्सव' अंकित है । ईस्ट इण्डिया कम्पनी शासन-काल में सोरा (सोड्डा) कम्पनी में कार्यरत अंग्रज लेखक जान मार्शल ने 1672 में प्रकाशित अपनी पुस्तक 'जॉन मार्शल इन इण्डिया' में सोनपुर मेला और कार्तिक स्नान के बारे में लिखा है जिसे उन्होंने स्वयं 1671 में देखा था । लॉर्ड मेयो ने 1871 में सोनपुर दरबार लगाया था, तब नेपाल के तत्कालीन राजा राणा जंग बहादुर का गुणगान किया गया था । इससे पूर्व 1857 में गदर के नायक वीर कुँवर सिंह ने यहीं से हाथियों की खरीदारी की थी, इस प्रकार यह स्वतंत्रता संग्राम से भी जुड़ा है । इससे और भी पहले 1846 में सोनपुर में ही हरिहर क्षेत्र रिजोल्यूशन पास हुआ था जिसमें पीर अली, ख्वाजा अब्बास, वीर कुँवर सिंह आदि उपस्थित थे । यहीं वीर शिवाजी द्वारा घोड़े खरीदने की भी लोकश्रुति है । मौर्य वंश के संस्थापक चन्द्रगुप्त (340 ई० पू०- 298 ई. पू०) और मुगल सम्राट अकबर ने भी हाथियों और अस्त्र-शस्त्रों का क्रय किया था । 1960 में प्रकाशित सारण (जिला) गजेटियर के अनुसार, यह मेला साढ़े चार वर्गमील में होता था । जनश्रुतियाँ कहती हैं कि यह कभी 500 एकड़ में होता था । आज भी यह लगभग ढ़ाई वर्गमील में फैला हुआ है । पर्यटन विभाग के आँकड़े के अनुसार, गत वर्ष लगभग चालीस लाख लोग मेला में आए थे । इस मेला के लिए 'मेला स्पेशल' रेलगाड़ियो का परिचालन पूर्व मध्य रेल की ओर से किया जाता है । यह एशिया महाद्वीप का विश्वप्रसिद्ध सबसे प्राचीन और बड़ा मेला है ।

अंग्रेज-काल में इस मेला को पशु-मेला का रूप दे दिया गया । 1958 में प्रकाशित मुजफ्फरपुर गजेटियर में यह दृष्टिगोचर होता है कि ईस्ट इण्डिया कम्पनी के लॉर्ड क्लाइव ने 1803 में यहाँ एक विशाल अस्तबल का निर्माण कराया था । नेपाल रेजिडेंट के रूप में नॉक्स नामक अंग्रेज इसका कैप्टेन था । 1837 में गंडक में बाढ़ आई थी जिसमें यह रेसकोर्स बह गया, तब इसे सोनपुर लाया गया, इससे पूर्व यह हाजीपुर तक विस्तारित था । यहाँ अंग्रेज ऑफिसर घुड़सवारी तथा पोलो खेलने भी आते थे । आज भी विदेशी सैलानी पर्यटकों का यह पसंदीदा मेला है । अकबर के प्रधान सेनापति महाराजा मान सिंह भी हाथी और अस्त्र-शस्त्र यहीं से लेते थे । जंग-हाथी के अतिरिक्त मुल्तानी एवं अन्य नस्ल के घोड़े आज भी बड़ी तादाद में यहाँ उपलब्ध होते हैं । गत वर्ष सीवान के 'सुल्तान' नामक घोड़ा और 'बिजली' नामक घोड़ी की कीमत लाखों में थी । हाथी, घोड़ों के अतिरिक्त अन्य पालतू और शौकिया पशु-पक्षी आज भी देखे जाते हैं जिनकी मांग आसमान छूती है । ये पशु-पक्षी मेले की शान समझे जाते थे । यहाँ का व्यापारिक सम्पर्क अफगानिस्तान से सीधा जुड़ा हुआ था । अंग्रेजों के काल तक ईरान, अरब आदि देशों से अच्छी नस्ल के घोड़े लाए जाते थे । अफगानिस्तान के इस रूट को 'उत्तरा पथ' कहा गया । डॉ. मोतीचन्द्र ने 'सार्थवाह' नामक अपनी पुस्तक में ऐसा वर्णन किया है । इसके अतिरिक्त मखमल (बनारस से) जरी जड़ित वस्तुएँ, कश्मीरी शॉल आदि का व्यापार आज भी होता है । यहाँ से चीजें समुद्र-मार्ग से यूरोप भेजी जाती थीं । इतना ही नहीं, पशु-मेला के अतिरिक्त आर्ट एण्ड क्राफ्ट की प्रदर्शनी भी लगायी जाती है । भू-राजस्व विभाग द्वारा लगाया जाने वाला

स्टॉल, संस्कृति को बढ़ावा देने के उद्देश्य से खेलों का आयोजन, कॉटेज, लोक-रूचि के वस्त्र, भोजन-व्यंजन आदि के अतिरिक्त छोटी-से-छोटी चीज, सूई से लेकर हाथी तक, उपलब्ध होता है । आत्मसमर्पण के बाद जादूगर बने डाकू माधो सिंह इस मेला में जादू दिखाने आते थे । यहाँ नब्बे के दशक तक सर्कस भी खूब लगता था । कार्तिक पूर्णिमा के अवसर पर पर्यटक मोक्ष की कामना से गंगा नदी में डुबकी लगाकर स्नान करते हैं । दैनिक जीवनोपयोगी हर प्रकार की वस्तुओं को यहाँ देखा जा सकता है, यहाँ से खरीदा जा सकता है । इस मेला ने अपना कलेवर बदला है और जनता खींची चली आती है ।

बिहार की सांस्कृतिक झलकियों का यह प्रमुख केन्द्र होता है । मनोरंजक गतिविधियाँ प्रतिदिन चलती रहती हैं । नौटंकी, नाच, गायन, वादन अबाध चलता है । सरकारी एवं गैर-सरकारी संस्थाओं द्वारा कार्यक्रम प्रस्तुत किए जाते हैं । गीत एवं नाटक प्रभाग द्वारा अनेक बहुद्देशीय कार्यक्रम बनाए जाते हैं । यह मेला कई ऐतिहासिक क्षण एवं परम्परा को अपनी गोद में समेटे हुए है । यहाँ अनेक प्रसिद्ध कलाकार हस्तियाँ अपनी कला का जलवा बिखेरा करते हैं । दर्शकों, पर्यटकों के लिए गीत-संगीत का अनूठा आयोजन होता है । 'थियेटर' इस मेले की जान है । लोक-संस्कृति के इस ख्यातिप्राप्त मेला में नौटंकी की मल्लिका गुलाब बाई का जलवा विश्वप्रसिद्ध था । यह वह दौर था जब महिलाओं की भूमिका पुरूष ही निभाते थे । गुलाब बाई प्रथम महिला थीं जिन्होंने नौटंकी में गीत-संगीत की प्रस्तुति का आरम्भ किया । तब शनैः शनैः नौटंकी में महिलाओं का प्रवेश होने लगा था । गुलाब बाई इस मेला की शान थीं । उन्हें इस कला के लिए संगीत नाटक अकादमी अवार्ड तथा 'पद्मश्री' (1990) भी प्राप्त हुआ । उन्होंने 1950 में 'गुलाब थिएट्रिकल कम्पनी' की स्थापना की । उनका मूल नाम गुलाब जान था । नौटंकी के कलाकारों के लिए तब संगीत का ज्ञान आवश्यक माना जाने लगा । 'लैला मजनूँ' की लैला, 'राजा हरिश्चन्द्र' की तारामती, 'शीरीं फरहाद' की शीरीं की भूमिका में गुलाब बाई अत्यन्त प्रसिद्ध थीं । हिन्दी फिल्म 'मुझे जीने दो' का गीत 'नदी नारे ना जाओ श्याम पैंया पड़ूँ' को मूलतः गुलाब बाई ने ही गाया है । प्रसिद्ध हिन्दी आलोचक के अनुसार, फणीश्वर नाथ 'रेणु' के 'मारे गए गुलफाम', जिस पर 'तीसरी कसम' फिल्म बनी', की नायिका मूलतः गुलाब बाई ही हैं । श्री कृष्ण राघव ने इन्दिरा गाँधी नेशनल सेन्टर ऑफ आर्ट्स द्वारा 'एक थी गुलाब' नामक डाक्यूमेन्ट्री तैयार की है । यही नहीं, पेंगुइन इण्डिया द्वारा 2006 में 'नौटंकी की मलिका : गुलाब बाई' प्रकाशित किया जिसका लेखन सुश्री दीप्ति प्रिया मेहरोत्रा ने किया । नौटंकी के संगीत और गायन में गुलाब बाई का बहुमूल्य योगदान है । 1926 में उत्तर प्रदेश के कन्नौज में बेदिया जाति के कृषक परिवार में जन्मी गुलाब बाई ने अपनी बहनों को भी आगे बढ़या । 1996 में उनकी मृत्यु के बाद उनकी पुत्री मधु अग्रवाल कानपुर में इस परम्परा को गुलाब बाई की कम्पनी के द्वारा आगे बढ़ा रही हैं । कानपुर-शैली की नौटंकी गुलाब बाई के कारण ही जगप्रसिद्ध है । कानपुर की रामलीलाओं पर पारसी थिएटर के अतिरिक्त नौटंकी शैली की छाया अद्यतन दृष्टिगोचर होती है । यद्यपि नौटंकी की दूसरी शैली हाथरस-शैली भी है । एक जमाना ऐसा था जब नौटंकी के सहारे कला का प्रदर्शन होता था और सोनपुर मेला की नौटंकी जगप्रसिद्ध थी । लगभग 1830 में ही यहाँ सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आरम्भ हुआ था, देश-भर के प्रसिद्ध कलाकार अपनी-अपनी प्रस्तुतियाँ देते थे । आरम्भ में राम और कृष्ण लीलाएँ भी खूब होती थीं । बाद में, सर्वप्रथम पारसी थिएटर लगाए गए । देश के प्रसिद्ध गायक-गायिकाएँ-नर्तकियाँ-फिल्मी हस्तियों का जमावड़ा लगता । कलकत्ता की गौहर बाई, इटावा की तिलोत्तमा, इलाहाबाद की जानकी देवी, पटना की मुहम्मद वादी, राजेश्वरी बाई की महफिले होती थीं ।

सुप्रसिद्ध फिल्म अभिनेत्री नरगिस की माँ जद्न बाई कई वर्षों तक अपनी प्रस्तुतियाँ देती रहीं । सोनपुर मेला में गौहर जान द्वारा प्रस्तुत मल्हार–गायन और घनघोर वर्षा का जिक्र आज भी हो जाता है । भींग जाने के बाद भी वे गाती रह गई थीं और श्रोता भी जमे रहे थे । ऐसे कार्यक्रमों को देखने–सुनने के लिए देश–भर से लोग आते थे । आज भी यहाँ थिएटर का अहम् रोल है । बड़ी संख्या में थिएटर देखने के लिए भीड़ एकत्र होती है । गीत–संगीत के बड़े–बड़े कलाकार आमंत्रित किए जाते हैं । कला, संस्कृति एवं युवा विभाग द्वारा देश–भर के सुप्रसिद्ध कलाकारों की प्रस्तुतियाँ होती हैं । सांस्कृतिक–सांगीतिक रूप से यह मेला बहुत समृद्ध रहा है ।

आज, कई कलाएँ न्यून देखने–सुनने में आती हैं परन्तु जब ये आँखों के सामने प्रस्तुत होती हैं, अपनी सांस्कृतिक कलात्मकता को प्राप्त करने, सहेजने, सँवारने, समृद्ध बनाने को हम आतुर हो जाते हैं । ये जीवन्त कलाएँ हैं, इन्हें सींचने–सँवारने की नितान्त आवश्यकता है । इस हेतु चिन्तन–मनन और पहल की दरकार है । आधुनिकता की दौर में हम जीवन्त कलाओं से पीछे छूट रहे हैं । इसके लिए नीतियों का निर्धारण अपेक्षित है । ऐसी अनगिनत आशाओं के साथ 'स्तोम' शोध–पत्रिका का यह अंक अनगिनत नवीन बिन्दुओं पर शोध–आलेखों से सिंचित हो, अपने सुधी पाठकों, जिज्ञासुओं के समक्ष प्रस्तुत है । आपके बहुमूल्य विचार हमारा मार्गदर्शन करेंगे । 'स्तोम' की पूरी टीम को सौहार्दपूर्ण अपेक्षित मार्गदर्शन एवं सहयोग के लिए हार्दिक साधुवाद और सभी सुचिन्तक लेखकों, शोध–प्रज्ञों को अनेकशः बधाइयाँ !

नव वर्ष की नव ऊर्जा के साथ नव–नव शुभकामनाएँ,

(लावण्य कीर्ति सिंह 'काव्या')

अनुक्रम

			पृ.सं.
	सम्पादकीय		iv-vii
1.	पं. कुमार गन्धर्व के क्रान्तिकारी विचार	मुकेश गर्ग	01
2.	सामवेदीय लक्षणग्रन्थ 'स्तोभानुसंहारकारिका' : एक परिचय	प्रो. पंकज माला शर्मा	04
3.	A Comparative Study of Carnatic-Mridangam Drum and Sri Lankan-Kandyan Drum	Prof. K. Shashi Kumar W.M.H.G.U.I.T.B. Weerakoon	06
4.	भारतीय स्वाधीनता संग्राम और राष्ट्रकवि दिनकर	प्रो0 (डॉ.) छाया सिन्हा	18
5.	योग का तबला–वादन में प्रयोग	प्रो0 डॉ वसुधा सक्सेना	21
6.	मगही लोकनाट्य में संगीत	प्रो. निशा झा	24
7.	Exploring the Blend of Kathak Dance and Maand: Deciphering Influences, Rhythmic Designs and Melodic Configurations	Dr. Parul Purohit Vats	28
8.	Emerging Technologies in Music Education	Dr. Sangeeta	34
9.	महिलाओं द्वारा प्रस्तुत गीति–लोकनाट्य : एक अध्ययन	डॉ. अरविन्द कुमार	39
10.	Library : As a Preserver and Promoter of Cultural Heritage of India	Pramanna Gurung	43
11.	Sankīrṇa Rāga Lakṣanā	Sharanya Sriram	48
12.	Comparative study of types of heroines in separation in the Bandish-es of Hindustani music: with reference to Ashtanayika-s	Dr. Swapnil Chandrakant Chaphekar	53
13.	In Search of Ingenuity and Freshness: A Brief Study of The Excerpts from Jean Dubuffet's "In honor of savage values"	Somaditya Datta	59
14.	Recycling and Upcycling Fashion : A Reusing, Reprocessing and Remaking The Used Clothing in a Sustainable Occurrence	Subarna Ghosh	68
15.	हिन्दी चित्रपट संगीत में भारत के विभिन्न प्रान्तों के लोक संगीत का प्रयोग : निरीक्षण एवं समीक्षा	डॉ. सिमरप्रीत कौर	76
16.	'संगीतरत्नाकर' के स्वरगताध्याय की प्रासंगिकता	डॉ0 दीप्ति श्रीवास्तव	81

17.	महाकवि विद्यापतिरचित ऋतुगीतों का सौन्दर्यात्मक पक्ष	डॉ0 जगबन्धु प्रसाद	84
18.	हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत में 'राग' की अवधारणा	श्रीप्रकाश पाण्डेय	89
19.	विज्ञापन कला एवं कम्प्यूटर तकनीक माध्यम पर विमर्श	चारू यादव संजीव किशोर गौतम	93
20.	Ideal Institute for Performance Oriented Education in Classical Music : A Layout	Dr. Monika Soni	99
21.	The Ancient Art Form of Puppetry and its different types in India	Dhananjay Kumar	105
22.	किन्नौर के देवी–देवताओं के गीत	डॉ. सरिता नेगी	110
23.	The Carving and Relief Sculptures of The Northeast : Special Emphasis on Unakoti in Tripura as A Site of Historical Significance	Debabrata Das	116
24.	Digital Literacy and its influencing characteristics for human resources working in the fashion industry	Suranjan Lahiri	121
25.	The Progress and Obstacles of The Fashion Industry in India Post-colonial Rule; The Opportunity to Embrace Sustainability in its Operations and The Recent Scenario Post-Pandemic	Srijana Baruah	130
26.	उपशास्त्रीय संगीत के अंतर्गत प्रमुख गायन–शैलियों का सौन्दर्य पक्ष एवं प्रयोग	डॉ. स्मृति त्रिपाठी	137
27.	अमूर्त कला के प्रतीकों का महत्व	डॉ0 सुनील कुमार पटेल	140
28.	A Dialectics of Narrative Voices: (Re) Reading Nayomi Munaweera's Island of a Thousand Mirrors	Ms. Sisodhara Syangbo	146
29.	Indian Tribal Art and Its Application in Textiles	Ms. Anshu Singh Choudhary Dr. Deepti Pargai	151
30.	पंजाब की प्रसिद्ध लोक कला 'फुलकारी'	डॉ. कमल जीत सिंह	163
31.	Cascading Whispers: Unveiling the Mellifluous Metaphor of the Slumbering River in When the River Sleeps - A Serendipitous Ecological Sojourn amidst Nature's Embrace.	Kanseng Shyam	167
32.	भारतीय वृन्द–वादन/कुतप का ऐतिहासिक विकास क्रम	डॉ. मधुमिता भट्टाचार्य	172
33.	स्वतंत्रता पूर्व काल में संगीत की स्थिति	डॉ. आकांक्षी	175
34.	भोजपुरी लोकगीतों में साहित्य	डॉ. ऋचा वर्मा	179
35.	मिथिलांचल में विवाह संकीर्तन और स्नेहलता के पद	डॉ. ममता कुमारी	183

36.	Studio Theatre as a Revolution in Theatre	Manish Joshi Dr. Smriti Bhardwaj	186
37.	An Empirical Study on the Objectification of Women in Bollywood Item Songs	Junny Kumari	189
38.	कथक नृत्य एवं ठुमरी	डॉ. पूजा चौधरी	194
39.	19वीं शताब्दी की भक्तिपरक बन्दिशों के प्रमुख वाग्गेयकार	डॉ. सर्वेश शर्मा	199
40.	A Comprehensive Examination of Instagram's Influence on the Young Generation's Musical Taste	Soummay Ghosh	205
41.	तबला–वादन में रचना एवं रचना विस्तार सौन्दर्य का विश्लेषणात्मक अध्ययन	शशी रॉय	213
42.	संगीत शिक्षा की प्राचीनकालीन शालेय शिक्षण–प्रणाली	एलिस गुप्ता	216
43.	व्यक्तित्व विकास में भारतीय शास्त्रीय नृत्य की भूमिका	डॉ. खिलेश्वरी पटेल	220
44.	साहित्य–संगीत एवं ललित कलाएँ : सम्बंध, महत्त्व एवं परम्परा	डॉ. कपिल देव	224
45.	सौन्दर्यशास्त्र की भारतीय परंपरा की विवेचना	डॉ. रूचि मिश्रा	229
46.	Importance of Expertise in 2d Classical Animation Art in Today's Animation Industry in India	Dr. Loveneesh Sharma Lt. Jayanta Roychowdhury	235
47.	Sufi : It's Impact On Indian Music	Dr. Jyoti Sharma	243
48.	Peekaboo : Peeking through Design Trends- Past, Present & Future	Radhika Kishorpuria	248
49.	Translation of the Tribal Songs of Bhutia Community of Darjeeling Hills	Dr Kaustav Chakraborty	251
50.	Resignification of Buddhism; Eastern Himalayas in-between remembering and forgetting	Nimu Sherpa	258
51.	The Portrayal of Queer Characters in Indian Web Series : The Lesser Problematic Space	Shatabdi Chakraborty	264
52.	भारतीय क़व्वाली गायकी के परिवेश में शिष्य एवं वंश–परम्परा : एक दृष्टि	डॉ. वैभव कैथवास	271
53.	बौद्ध धर्म में संगीत का प्रचार–प्रसार	दीपक वर्मा	276
54.	Music and Social Bonding: Analyzing the Role of Music in Building and Strengthening Relationships	Dr. Ram Manohar Sharma	281
55.	Origin, History and Development of Tabla – A Study	Dr. Nikhil Bhagat	290
56.	A brief study of Indian Theatre evolution -Architecture and Style	Dr. Jyoti Singh	296

57.	Harmony in Motion: Exploring the Enigmatic World of Mudras in Indian Iconography and Classical Dance	Simer Preet Sokhi	303
58.	The Science of Sound and Recording : A Brief Study	Dr. Renu Gupta	309
59.	भारतीय संगीत में गज़ वाद्यों की परम्परा : एक अध्ययन	खुश पॉल डॉ. श्वेता कुमारी	315
60.	Ethnic Community and Cultural Tradition in The Context of Globalization: A Study on Dimasa Ethnic Group of Barak Valley, Assam	Dr. Binoy Paul	320
61.	कालिदास की रचनाओं में प्रकृति–चित्रण के शिल्पगत सौंदर्य की अभिव्यंजना	डॉ. रंजना उपाध्याय	326
62.	संगीत के परिप्रेक्ष्य में : भूत, वर्तमान और भविष्य	डॉ. रोज़ी श्रीवास्तव	330
63.	नाट्यशास्त्र में भरत की रस परिकल्पना	डॉ. ज्ञानेश चन्द्र पाण्डेय	333
64.	निम्बार्क सम्प्रदाय के मन्दिरों में प्रचलित गायन विधाएँ	डॉ. गौरव शुक्ल	335
65.	'संगीत शिरोमणि' पंडित प्रह्लाद प्रसाद मिश्र 'दास पिया' : संगीत और व्यक्तित्व	डॉ. सौरव कुमार नाहर	339
66.	संत कबीर की विचारधारा में हठयोग के सिद्धान्तों का समीक्षा	डॉ. ज्योति शर्मा	342
67.	उत्तरी तथा दक्षिणी संगीत के पृथक् होने से पूर्व की स्थिति, उसके कारण तथा प्रभाव	डॉ. शालिनी ठाकुर	346
68.	हरियाणवी लोकगीतों में भावों के उद्गारक तत्त्व	डॉ. रचना	353
69.	विज्ञापन–कला द्वारा उपभोक्ता–समाज की भाषिक संवेदना का विदोहन	डॉ. प्रियंका श्रीवास्तव	357
70.	विश्वविद्यालयीय संगीत शिक्षा में शिक्षण प्रविधि व नई शिक्षा नीति	डॉ. श्वेता केशरी	363
71.	वर्तमान परिप्रेक्ष्य में महिलाओं की समस्याएँ एवं समाधान : संगीत के संदर्भ में	डॉ. ममता यादव	368
72.	सोहराई चित्रकला एवं संस्कृति	सितेन्द्र रंजन सिंह	372
73.	The Application of Wood Gravure Printing in Dasha Mahavidya	Jayanta Naskar	376
74.	Uniqueness of the Gat of Tabla	S Sai Ram	380
75.	Performing Arts between Tradition and Contemporaneity (with special reference to teaching learning in Bharatanātyam)	Deepthi Radhakrishna Dr. Shobha Shashikumar	388
76.	ManobodhaChautisa : A magnificent literary composition by the eminent Bhakta Poet, Sri Bhakta Charan Das of Odisha	Dr. Bilambita Banisudha	393
77.	Challenges for Communication in the Era of Social Media	Dr. Bala Lakhendra	401
78.	बहुलतावादी बोध के कवि भवानी प्रसाद मिश्र	डॉ. अविनाश कुमार सिंह	407
79.	मानव जीवन में संगीत का महत्व	डॉ. आशुतोष शर्मा	414

80.	उत्तर भारतीय संगीत में राग एवं उससे उत्पन्न रस : एक महत्वपूर्ण तत्त्व	अलंकार महतोलिया	419
81.	निर्गुण भक्ति के प्रणेता कबीर दास	मेघना कुमार	423
82.	कुमाऊँ की लोक संगीत–परम्परा	डॉ. रवि जोशी कमल जोशी	427
83.	कालिदास साहित्य में कला–वैभव	अंकिता आर्य डॉ. जी. एल. पाटीदार	434
84.	उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत में किराना घराना	प्रियंका सहवाल डॉ. सुभाष विश्नोई	439
85.	The Significance of Folk Music and Media in India's Freedom Struggle	Badshah Alam Prabhat Kumar Dubey	442
86.	भारतीय संगीत में वैश्वीकरण का प्रभाव : एक अध्ययन	डॉ. पंकज शर्मा	447